अहेवाल

श्री महिला आर्ट्स एन्ड कोमर्स कोलेज जोशीपुरा – जूनागढ

डॉ. चंद्रिका आर. ठाकर

द्वारा

प्रस्तुत

U.G.C.

माईनोर रीसर्च – दिनांक : 18 Feb. 2013 to 18 Feb. 2015

शीर्षक : मूल्यनिष्ठ शिक्षा में संस्कृत साहित्य का योगदान

प्रस्तुत कर्ता

Thaker C.R.

डॉ. चंद्रिका आर. ठाकर

श्री महिला आर्ट्स एन्ड कोमर्स कॉलेज

जोषीपुरा – जूनागढ.

दिनांक :

इन.प्रिन्सिपालश्री

नयनाबेन गोंडलीया

श्री महिला आर्ट्स एन्ड कोमर्स कॉलेज

जोषीपुरा – जूनागढ.

दिनांक :

Scanned by CamScanner

अहेवाल

"मूल्यनिष्ठ शिक्षा में संस्कृत साहित्य का योगदन" एक अनन्य शोधकार्य हैं । आज जब देश और दूनिया भ्रष्टाचार, आंतकवाद, और जातपात की समस्या से पीडित है, तब समाज जिवन में मूल्यनिष्ठा की अति आवश्यकता है । समाज जब मूल्यविहीन हो जाता है, तब कोई भी समाज का पतन होता है । इसलीये समाज में फीर से मूल्यो को प्रस्थापित करने की आज अति आवश्यकता है ।

इस शोधकार्य चार प्रकरण में विभाजीत है जो इस तरह है ।

(१) शिक्षा – शिक्षा का महत्त्व – मूल्य का विकास

(२) संस्कृत साहित्य में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(३) मूल्यनिष्ठ शिक्षा के बारे में विद्वानो के अभिप्राय

(४) प्रायोगिक शोधकार्य

प्रकरण – १

प्रथम प्रकरण शिक्षा विषयक है, क्योकि जब शिक्षा की संपुर्णतया समज न हो तो मूल्यनिष्ठ शिक्षा की समज का विकास नहीं हो सकता हैं ।

इस प्रकरण में निम्नलिखीत मुदे समावीष्ठ किये गये है ।

- प्रस्तावना
- शिक्षा का अर्थ
- शिक्षा के प्रति विद्वानो के मंतव्य
- शिक्षा का महत्त्व
- शिक्षा का व्यापक अर्थ
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा
- मूल्य का वर्गीकरण
- मूल्य के लक्षण
- मूल्यनिष्ठ शिक्षा की आवश्कता

Scanned by CamScanner

- मूल्य का विकास
- राष्ट्रीय शिक्षणनीति में मूल्य शिक्षण

शिक्षा मानव ओर समाज की उन्नति की प्रक्रिया है। शिक्षा के लीये संस्कृत भाषा में, 'विद्या' अंग्रेजी में Education और हिन्दी भाषा में शिक्षा शब्द प्रचलित है। शिक्षा का महत्त्व युगो से मानव समाज ने स्वीकृत किया है। शिक्षा के बारे में ऋषिमुनियो और अनेक विद्वानो ने चिंतन किया है, जैसे

आ रोह तमसु ज्योतिः

हम अंधकार से निकलकर प्रकाश की ओर बढे।

''शिक्षा युवा शक्ति का नियमन करती है, वृद्धो के लिये आश्वासन हैं। गरीबो की संपत्ति है ओर अमीरो का मुल्य है।

भारतीय संस्कृती ओर समाज मुल्य पर आधारीत है, मुल्य भारतीय संस्कृति की आधार शीला है, मुल्यो के समन्वय से ही चारीत्र्य निर्माण होता है।

मूल्य का अर्थ :
- श्रेष्ठता का अंकनकरना
- पात्रता का मूल्यांकन
- जो अपेक्षित है, वह मूल्य है
- व्यक्ति के गुण लक्षण

मूल्य अनेक प्रकार के होते है, जैसे आध्यात्मिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, शारिरीक मूल्य, राजकीय मूल्य, वैश्विक मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य आदि।

राष्ट्रीय शिक्षा निती में भी मूल्यनिष्ठ शिक्षा को स्वीकृत किया गया है।

Scanned by CamScanner

इस तरह प्रथम प्रकरण में शिक्षा - शिक्षा का महत्त्व ओर मूल्य का विकास आदि को विस्तृत तरीके से स्पष्ट किया गया है।

प्रकरण : २

इस शोधकार्य का दूसरा प्रकरण है।

" संस्कृत सांहित्य में मूल्यनिष्ठ शिक्षा "

संस्कृत साहित्य विश्व का सर्वाधिक सम्पन्न साहित्य है। भारतीय समाज के भव्य विचारो का वह दर्पण स्वरूप है। मानव मन की उन्नत कल्पना, ह्रदकी गहन भावना ओर आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक समुत्कर्ष को प्रगट करनेवाला संस्कृत वाग्मय अनुपम एवम अतुलनीय है।

भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र नैतिक मूल्य का जतन करना है। किसी भी देश की संस्कृति का आधार नैतिकता है। भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य जैसे न्याय, मानवता, आध्यात्मीकता, पाप-पुण्य, दान, तप, अहिंसा, आत्मकल्याण, त्याग, सेवा भावना, सदाचार, आत्मसंयम आदि सभी संस्कृति साहित्य के ग्रंथो में विद्यवान है।

संस्कृत साहित्य के अमूल्य ग्रंथो में जो नैतिक मूल्य है, उनको फिर से जनमानस में स्थापित करना आवश्यक है, अतः संस्कृत साहित्य में मूल्यनिष्ठ शिक्षा को प्रस्तुत करने का इस प्रकरण में प्रयास किया गया है, जो इस तरह है।

(१) वैदिक वाङ्मय में मूल्यनिष्ठा

(२) उपनिषद् ग्रंथो में मूल्यनिष्ठा

(३) महाभारत में नैतिकमूल्य

(४) स्मृतिग्रंथो में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(५) श्रीमद् भगवतगीता में निरुपित मानवमूल्य

Scanned by CamScanner

(६) महाकवि कालिदास की कृतियों में प्रस्थापित मानवमूल्य

(७) रामायण में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(८) श्रीमद् भागवतपुराण में वर्णित नैतिकमूल्य

(९) भर्तृहरि के नीतिशतक में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(१०) पंचतंत्र और हितोपदेश में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(११) चाणक्य के नीतिसुत्रो में मूल्यनिष्ठ शिक्षा

(१२) आंतकवाद का परिहार करने में संस्कृत की मूल्यनिष्ठ शिक्षा

इस तरह सर्व संस्कृत ग्रंथ मूल्यनिष्ठा से पूर्ण है । जीस की योग शिक्षा से आज की सभी समस्याओ का हल पाया जायेगा ।

प्रकरण : ३

इस शोधकार्य का तृतिय प्रकरण

'मूल्यनिष्ठ शिक्षा के बारे में विद्वानो का अभिप्राय' है ।

शिक्षा एक एसी प्रक्रिया है, जीन के द्वारा व्यक्ति के ज्ञान, चारित्र्य ओर आचरण का निर्माण होता है । शिक्षा का अर्थ

'व्यक्ति की संपुर्णता ओर उनकी योग्यता के अनुसार उनका पूर्णतया विकास'

–केन्ट

वैदिककाल से शिक्षा के चिंतन का आरंभ हुआ है । ओर वो आजतक गतिमान है । शिक्षा का उद्देश बालक को आदर्शजीवन ओर आदर्शजीवन व्यवहार शिखाने का है । शिक्षा से ही चरित्र्य निर्माण होता है, ओर व्यक्ति मानव से महामानव की ओर प्रयाण करता है ।

इस द्दष्टि को नजर अंदाज करके इस प्रकरण में प्राचिन ओर अर्वाचित विद्वानो के मूल्यनिष्ठा के बारे में अभिप्राय प्रस्तुत किये गये है । जो इस तरह है

Scanned by CamScanner

प्राचीन विद्वान :

१) जीन जेक रूसो

२) महात्मा गांधी

३) डॉ. राधाकृष्ण

४) विवेकानंद

५) रविन्द्रनाथ टागोर

६) श्री अरविंद ओर माताजी

७) जे. कृष्णमुर्ति

अर्वाचीन विद्वान :

(१)	डॉ. अे.वी. परमार साहेब	महुधा कोलेज, जी. खेडा
(२)	श्री बी. जी. पटेल	महुधा कोलेज, जी. खेडा
(३)	डॉ. योगीनी बहन व्यास	उमा आर्ट्स अेन्ड कोमर्स कोलेज - गांधीनगर.
(४)	नवनीतभाई जोशी-	श्री अेम.बी. आर्ट्स अेन्ड कोमर्स कोलेज-गोंडल
(५)	डॉ. हेमलता बोलिया-	उदयपुर (राजस्थान)
(६)	डॉ. किर्तिदा व्यास -	अेस.वी. आर्ट्स अेन्ड कोमर्स कोलेज, मांडवी(कच्छ)
(७)	डॉ. अेम. अेम. बारड-	,,
(८)	वर्षा अेच. पटेल- -	आटर्स कोलेज शामलाजी
(९)	डॉ. राजेन्द्र चोटलिया-	संस्कृत भवन, सौ. युनि. राजकोट.
(१०)	डॉ. भावप्रकाश गांधी -	सरकारी विनीयन कोलेज-भेसाण

इन सभी विद्वानो के चिंतन से यह स्पष्ट होता है की मूल्यनिष्ठ शिक्षा विद्यार्थीओ के लीये अति आवश्यक है।मूल्यनिष्ठा शिक्षा से ही आदर्श नागरिक का निर्माण होता है ओर वह राष्ट्र को समर्पित होता है।

Scanned by CamScanner

प्रकरण – ४

प्रकरण – ४ में संस्कृत साहित्य में मूल्यनिष्ठ शिक्षा के बारे में प्रायोगीक शोधकार्य किया गया है । जिस में निम्न लिखित मुदे की स्पष्टता की गई है ।

- प्रस्तावना
- मूल्यनिष्ठा शिक्षा की आवश्यकता
- शोधकार्य की उत्पकल्पना
- शोधकार्य की योजना
- प्रायोगीक योजना का फेक्टर
- कसोटी रचना और सामग्री चयन
- कसोटी का स्वरुप
- कसोटी की विश्वसनीयता
- कसोटी की यथार्थता
- शोधकार्य की क्षेत्र मर्यादा
- क्षेत्र मर्यादा का कोष्टक
    - ग्राम्य विस्तार कोष्टक
    - शहेरी विस्तार कोष्टक
- वय कक्षा
- माहिती एकत्रीकरण
- परिणाम का अर्थघटन
- शोधकार्य सारांश और सूचना

इस प्रायोगिक शोधकार्य में ग्राम्य विस्तार ओर शहेरी विस्तार के कुल ३०० विद्यार्थीयो ओर विद्यार्थीनीयो पर प्रायोगिक शोधकार्य स्वरचित कसोटी के माध्यम से किया गया है ओर यह सत्य शोधने की पूर्णतया कोशीश की गइ है, की संस्कृत साहित्य मूल्यनिष्ठ शिक्षा के लीये अनिवार्य है ।

Scanned by CamScanner

कोष्टक – २

क्रम	कॉलेज का नाम	युवा विद्यार्थी भाईओ	युवा विद्यार्थीनी बहेनो	कुल
१	गार्डी आर्ट्स अेन्ड कोमर्स कोलेज- मालीया हाटीना	२५	२५	५०
२	सरकारी आर्ट्स कोमर्स कोलेज- भेसाण,जि.जुनागढ	२५	२५	५०
३	अेम.डी.शाह कोमर्स अेन्ड बी.डी. पटेल–आर्ट्स कोलेज, महुधा, जि. खेडा	२५	२५	५०
४	कुल	७५	७५	१५०

कोष्टक – ३

क्रम	कॉलेज का नाम	युवा विद्यार्थी भाईओ	युवा विद्यार्थीनी बहेनो	कुल
१	बहाउदीन आर्ट्स कोलेज– जूनागढ	२५	२५	५०
२	श्रीमहिला आर्ट्स कोमर्स कोलेज–जोषीपुरा, जुनागढ	–	२५	२५
३	अेम.बी. आर्ट्स अेन्ड कोमर्स कोलेज, गोंडल,जि. राजकोट	२५	२५	५०
४	विवेक भारती बी. अेड. कोलेज – जूनागढ	२५	–	२५
५	कुल	७५	७५	१५०

इस तरह मैने 'संस्कृत साहित्य मूल्यनिष्ठ शिक्षा में योगदान' इस शोधकार्य अतीशय चिंतन–मनन करके किया है। ओर में स्पष्ट रूप से यह मानते हुं की संस्कृत साहित्य मूल्यनिष्ठ शिक्षा का सागर है। इसलीये मेरा अभिप्राय है की संस्कृत भाषा का अध्ययन प्राथमिक कक्षा से कॉलेज के विद्यार्थी तक विस्तारीत ओर अनिवार्य कीया जाये ओर श्रीमद्‌भगवतगीता जैसे राष्ट्रीय ग्रंथ सभी प्रवाह के छात्रो को

Scanned by CamScanner

आवश्यक रूप से पढाया जाये। आज भी अमेरीका में केम्ब्रीज युनिवर्सीटी में भगवत गीता सभी छात्रो को इसलीये ही पढाई जाती है।

संस्कृत साहित्य के सरक्षण, सवंर्धन ओर संप्रसारण की आज आवश्यकता है। संस्कृत साहित्य के अभ्यास से ही मूल्यनिष्ठा फिर से प्रस्थापित होगी, ओर समाज फिर से सुसंस्कृत होगा ओर वैदिक संस्कृति फिर से भारत में ओर विश्व में सुचारू रूप से प्रज्जलित होगी।

प्रकरण – ९ निष्कष :

इस प्रकरण में समग्र शोधकार्य का निचोड प्रस्तुत कीया गया है।

संस्कृत भाषा ओर मूल्यनिष्ठा समाज के आवश्यक है, इसलीये इस प्रकरण में संस्कृत साहित्य के ओर मूल्यनिष्ठा की प्रतिष्ठा के लीये आवश्यक सूचन दिये गये है।

संस्कृत भाषा फिर से राजभाषा बने ओर भारत में ओर विश्व में रामराज्य का फिर से आर्विभाव हो यह अपेक्षा की गइ है।

इस शोधकार्य दो साल तक सतत किया गया ओर इस शोधकार्य में नाणाकीय खर्च एक लाख बीस हजार का हुआ है।

// अस्तु //

Scanned by CamScanner

शोधकार्य का सारांश ओर सूचना :

- आज के युवानो शिक्षा में मूल्यनिष्ठा को आवश्यक समजते है ।
- संस्कृत साहित्य के रामायण, महाभारत, श्रीमद् भगवत गीता, नीतिशतक जैसे अनुपम ग्रंथ मूल्यनिष्ठा के आधार पूर्ण ग्रंथ है ।
- मूल्यनिष्ठा से आदर्श मानव का निर्माण होता है ।
- ग्राम्य विस्तार ओर शहेरी विस्तार दोनो के कॉलेज के युवान विद्यार्थीयों ओर विद्यार्थीनीयों मूल्यनिष्ठ शिक्षा को आवश्यक समजते है ।
- ग्राम्य विस्तार के भाईयों ओर बहेनो में मूल्यनिष्ठा में सरासरी तफावत बहोंत कम मात्रा में है ।
- अलग – अलग कॉलेज के विद्यार्थी भाईयों ओर विद्यार्थीनी बहेनो में मूल्यनिष्ठा का प्रमाण अलग–अलग दिखाई देता है ।
- संतो के चरित्र ओर उपदेश से मूल्यनिष्ठा में वृद्धि होती है ।
- प्राचीन ओर अर्वाचीन विद्वानो ने भी मूल्यनिष्ठ शिक्षा को आवश्यक माना है ।
- भ्रष्टाचार, आंतकवाद, आदि समस्या का समाधान मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही हो सकता है ।
- संस्कृत साहित्य की शिक्षा विद्यार्थीयों को प्रथम कक्षा से कॉलेज तक देने की अति आवश्यकता है ।
- ३०० विद्यार्थीयों ओर विद्यार्थीनीयों पर प्रायोगिक शोधकार्य के बाद यह स्पष्ट होता हैं, की संस्कृत साहित्य मूल्यनिष्ठ शिक्षा के लीये अति आवश्यक ओर अनिवार्य है । इसलीये भारत सरकार फिर से संस्कृत भाषा को फरजीयातरूप से पढाने की तरफ विचारणा जारी करे ।
- संस्कृत भाषा के सरक्षंण ओर संवर्धन के लीये भी सरकार प्रयत्नशील बने ।
- संस्कृत के विद्यार्थीयों को अनुदान की सहायता प्राप्त हो सके ।
- संस्कृत भाषा लोकभाषा – राजभाषा के स्वरूप में फिर से गतिशील बने ।
- संस्कृत के सेमीनार, वर्कशोप, संगोष्टि आदि का आयोजन मूल्यनिष्ठा के लिये अति उपयोगी साबित हो सकता है ।

शोधकार्य की समाजोपयोगीता

→ समाज में मूल्यनिष्ठा की वृद्धि होगी ।

→ समाज में संस्कृत साहित्य के अमुल्य ग्रंथ जैसे रामायण, महाभारत, श्रीमद् भगवतगीता आदि का वांचन बढेगा ।

→ शिक्षा के क्षेत्र में सुधार आयेगा ।

→ समाज शिक्षा के प्रति जागृत होगा ओर शिक्षा के क्षेत्र में नये नये शोधकार्य होगा ।

→ समाज में विवेकानंद, रविन्द्रनाथ टेगोर, श्री अरविंद ओर माताजी, जे. कृष्णमुर्ति जैसे शिक्षण चिंतको के विचारो का फैलावा बढेगा ओर जनसमुह उनके विचारो को अपनाने के लिये कटीबद्ध होंगे ।

Scanned by CamScanner